पं. राजेन्द्र प्रसाद शुक्ल की निबंध शैलियाँ

डॉ. द्वारिका प्रसाद चन्द्रवंशी

सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)
अटल बिहारी वाजपेयी शासकीय महाविद्यालय पाण्डातराई, जिला–कबीरधाम (छ.ग.)

पं. राजेन्द्रप्रसाद शुक्लएक प्रसिद्ध राजनेता होने के अलावा एक कवि एवं निबंधकार भी रहे हैं। इनकी कृतियों में निबंध संग्रहों की संख्या अधिक हैं। पं. शुक्ल कवि होने के नाते एक चिंतक भी रहे है, इसी कारण उनकी शैली संयत और सुष्ठु रूप से सुसज्जित होकर हमारे सामने उपस्थित होती हैं। पं. शुक्ल जी के विचार एवं चिन्तन अब तक पाँच निबंध संग्रहों के रूप में प्रकाशित हो चुके हैं। उन्होने विविध वर्ण्य विषयों पर अपनी लेखनी चलाई है। लीक से हटकर (1985), मेरी विचार यात्रा (1988), 'धरती की बात (1989)' 'माटी की महक (1985)' एवं संस्कृति का प्रवाह (2002) में प्रकाशित हुए हैं, जिनमें उनके द्वारा निबंधों की विविध शैलियों ने अभिव्यक्ति पाई है।

उद्देश्य :– पं. राजेन्द्र प्रसाद शुक्ल को समाज एक राजनेता के रूप में ज्यादा जानता है, चूँकि वे इसके साथ ही एक अच्छे साहित्यकार भी हैं, जिसे समाज से परिचित कराना व उनके निबंध की विविध शैलियों का विवेचन प्रस्तुत करना इस शोध आलेख का मुख्य उद्देश्य ळें

मुख्य शब्द :–माटी, गौरेया, नाद, ब्रह्माण्ड, हनुमानकूद, चिमनी, ढिबरी, हॉरमनी, स्टाइल।

इस शोध आलेख में तथ्यों का संकलन प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनो स्त्रोतों से आधार पर किया गया है। प्राथमिक स्त्रोत में पं. शुक्ल की कृतियाँ हैं व द्वितीयक स्त्रोत में अन्य विद्धानों की कृतियाँ सम्मिलित हैं।

पं. राजेन्द्र प्रसाद शुक्ल की निबंध शैलियाँ :–जे.एम.मरे ने उत्तम शैली के संबंध में विचार व्यक्त करते हुए कहा है – ''लेखक के स्वभाव, विषय और भाषा में पूर्ण सामंजस्य (हारमनी) होना चाहिए।''[1] शैली का अर्थ साहित्य में अंग्रेजी का 'style' के समानार्थी के रूप में लिया गया है। शैली अभिव्यक्ति का एक विशेष ढंग या तरीका है।

बाबू गुलाब राय के अनुसार – ''शैली अभिव्यक्ति के उस गुण को कहते हैं जिन्हें लेखक या कवि अपने मन के प्रभाव को समान रूप से दूसरों तक पहुँचाने के लिए अपनाता है।''[2]

अंग्रेजी कवि पोप ने शैली को 'विचारों की पोशाक' तथा महर्षि कार्लाइल ने तो इसे विचारों की 'चमड़ी' तक कह डाला है। स्पष्ट है कि शैली सामान्य रूप से किसी कृतिकार के अभिव्यंजना शक्ति का दयोतन करती है।

पं. शुक्ल के निबंधों में शैली के लगभग सभी रूपों का प्रयोग हुआ है, जिनका विवरण सोदाहरण प्रस्तुत है–

1) वर्णनात्मक शैली :– पं. राजेन्द्र प्रसाद शुक्ल जी ने अपने निबंधों में किसी स्थान वस्तु या व्यक्ति के यथा तथ्य वर्णन वर्णनात्मक शैली में किया है। इसमें उन्होंने अपनी ज्ञानेद्रियों की बहुधा सहायता ली है, जिससे तर्क एवं रोचकता में वृद्धि हुई है तथा पाठकीय रम्यता उद्भूत हुई है। उदाहरण –''एक बार विनोबाजी दक्षिण गए, जहाँ रामायण का बहुत विरोध हुआ था। लोगों ने उनसे रोश जताया और कहा कि राम की कथा तो दक्षिण पर उत्तर का आक्रमण है। विनोबा ने कहा रामायण को मैं इतिहास के रूप में नहीं लेता, बल्कि उस स्तम्भ के रूप में लेता हूँ जो मानव की मर्यादा को रेखांकित करता है। यदि इतिहास को देखे तो यह संभव ही नहीं है कि किसी के दस सिर हो। भक्ति की भावना से सोचते हैं तो भक्तिरस में भक्ति की तन्मयता है..... ।[3]

2) चित्रात्मक शैली :– इस शैली में वर्णित विषय का चित्र पाठक के मन–मस्तिष्क पर अंकित होते रहता है, जो उनमें रूचि एवं रम्यता का संचार करता है। पं. शुक्ल ने भी चित्रात्मक शैली का कई स्थलों पर यथोचित प्रयोग किया है। जैसे – '' एक सरोवर के तट पर वृक्ष–हृदय कुमुदवती को मूँदते हुए देखकर रो रहा था। रात्रि में गिरी हुई पाले की बूँदे उसके पत्रों से छनकर धरातल पर गिर रही हैं। ये उसके अश्रुकण है। उस बैठे हुए पक्षियों का कलरव मानो उसके रूदन के शब्द थे।'' [4]

ऐसे ही चित्रात्मकता का एक और दृष्य उसके प्रकृति चित्रण में रस वर्णन में दृष्टव्य है –

''साँस के आकाश में सूर्य की आभा को धारण करने वाला पनियाया बादल लाल गजचर्म सा प्रतीत होता है। अधपके केसर जैसे हरे और भूरे रंग कंदप पुष्प पर मंडराते हुए, नदी के कछार में अभी–अभी फूली कदली का स्वाद चखते हिरण और जंगलों में पहली वर्षा से भीगी धरती की सौंधी सुगंध सूंधते हाथी मेध को रास्ता बनाते चलते हैं। बरसात होने पर कलियों की नोकों मं विकसित केतकी के फूलों से बगीचों में प्रीतिमा छाई है, गौरैया के घोसलों से गाँव–चौबारे भर उठे हैं और पके हुए जामुन के गुच्छों से वन प्रांतर श्यामल हो चले हैं।'' [5]

3) विवेचनात्मक शैली :–इस शैली में मस्तिष्क शक्ति का विशेषतः प्रयोग होता है। पं. राजेन्द्र प्रसाद शुक्ल जी ने भी अपने निबंधों में अत्यंत सरस विवेचनात्मक शैली का प्रयोग काफी किये है। इस शैली के माध्यम से अपने पाठकों को प्रभावित करने की कला में शुक्ल जी पारंगत लगते हैं। इनकी इस शैली की विशेषता यह है कि उसे इतना सरल व आकर्षक रूप देते हैं कि पाठक का हृदय उसमें सहज ही रम जाता है, विचारों में कहीं भी दुराव या अस्पष्टता का आभास तक नहीं होता है। यथा– ''विद्यानों से क्षमा याचना यह जरूर कहना चाहूँगा कि गीतांजलि कबीरदास के विचारों का भावानुवाद है, जो कि उनको नोबल पुरस्कार भी दिलवा सका। कार्ल मार्क्स तो बहुत बाद पैदा हुए थे। उन्होंने जिन सिद्धान्तों को लिया, जो शोषण मुक्त समाज की उन्होंने बात की, उसका आधार हिंसा को लिया। लेकिन आप चले आइए 600 वर्ष पहले ऐसा लगता है, परत दर परत हमारे जीवन में अंतरंग के जितने रहस्य हैं, जितनी ऊँचाइयाँ हो सकती हैं, अंतरिक्ष से ऊपर भी उन जीवन के रहस्यों को परत दर परत खोलने अगर कोई संत हमारे सामने आकर खड़ा होता है और हमारी चेतना के द्वार पर दस्तक देता है, उसका नाम है कबीर।'' [6]

4) व्याख्यात्मक शैली :– इस शैली में गूढ़ गंभीर विषयों की व्याख्या की जाती है। पं. राजेन्द्र प्रसाद शुक्ल जी ने भी अपने निबंधों में गूढ़ विषयों की व्याख्या इस व्याख्यात्मक शैली में की है, जैसे – ''भारतीय दर्शन में ईश्वर की प्रथम सृष्टि आकाश है। आकाश का गुण है नाद, और इसी नाद की क्रोड़ में संगीत रूपी शिशु का जन्म हुआ। नाम–अनुनाद नामक दो क्रियाएँ संगीत के प्राण बिंदु हैं। संगीत के रियाज में इसीलिए बीनमंत्र आकार का रियाज मान्य है। ऐसा माना जाता है कि संपूर्ण ब्रह्माण्ड नाद के अधीन है। पंच महातत्वों – पृथ्वी, जल, आकाश, वायु और अग्नि में भी नाद है। सागर भी सात सुरों में बाँधा हुआ है। इसकी लहर–लहर में नया गीत है। प्रकृति से बड़ा कोई कलाकार नहीं है, जितने भी रूप आकार और रंग है, सभी प्रकृति के बनाए और दिये हुए हैं। प्रकृति ही अकेली मौलिक और प्रतिभावान कलाकार है। शेष उसकी सही या गलत नकल या अनुकरण करने वाले है।'' [7]

5) भाषण शैली :– भाषण शैली में उपदेश दिया जाता है, प्रश्न किया जाता है, और साथ ही समाधान भी किया जाता है। इसमें खण्डन–मण्डन भी किया जाता है। चूँकि पं. शुक्ल साहित्यकार के साथ राजनेता भी रहे है, जिनका भाषण से करीब का संबंध है, जिनका पुट उनके निबंधों में भी दृष्टव्य है। यथा – ''इस देश में एक सूरमा माखन लाल चतुर्वेदी जैसा था और क्या हम उसके रास्तेपर चलने की कोशिश कर रहे हैं? यह सोचने और चिंतन करने का वक्त है। सोचें एवं प्रेरणा लें। इसकी आज हमारे देश को बहुत जरूरत है .... हर आदमी खड़ा होकर हमसे पूछता है कि सरकार ने चालीस साल में क्या किया? यह तो आपको – हमको दीख रहा है। ये सड़कें, ये नहरें, ये पुल, ये कारखाने ..... सरकार ने चालीस साल में जो भी किया, हमने अपने चालीस साल में क्या किया? क्या स्वतंत्र देश के नागरिक होने का एक भी गुण हमने प्राप्त किया है? देश स्वतंत्र तो हो गया लेकिन स्वतंत्र देश का नागरिक होने के गुण हमने अपने आप में पैदा किये?'' [8]

6) संभाषण शैली :– यह शैली आत्मीयतापूर्ण, निष्छल व अनौपचारिक होती है तथा इसमें व्यावहारिक भाषा शैली की योजना रहती है। इसमें लेखक प्रसन्न भाव से अपने विचारों को व्यक्त करता है, जिससे भाव–प्रवाह में वह शब्दों को भी

ढीला कर डालता है। इस शैली में शाब्दिक क्लिष्टता नहीं होती। इसमें शब्द सरल, सरस व प्रवाहपूर्ण होते है। पं. शुक्ल जी के निबंधों के इस शैली के यत्र–तंत्र दर्शन होते ही रहते है। यथा – ''मिस्टर चरेघाट नाम का एक पारसी मजिस्ट्रेट था, जिसकी अदालत में उन्हें पेश किया गया। मजिस्ट्रेट ने पूछा – 'नाम'। आजाद बोले – 'आजाद'। बाप का नाम? आजाद ने जवाब दिया – 'स्वाधीनता'। मजिस्ट्रेट ने पूछा – 'घर'? आजाद ने कहा – 'जेलखाना'। मजिस्ट्रेट बौखला गया और पंद्रह बेतों की सजा सुना दी। बनारस के केन्द्रीय कारागार में आजाद के उघारे बदन पर सड़ासड़ बेतें पड़ रही थीं और बेत के हर आधात के साथ आजाद की निर्भीक आवाज में निकला – ''महात्मा गांधी की जय'' का उद्घोस दीवारों से टकरा रहा था।'' [9]

7) व्यंग्यात्मक शैली :– व्यंग्यात्मक शैली व्यंग्य विनोद एवं कटाक्ष से ओतप्रोत होती है। पं. शुक्ल जी स्वभाव से ही विनोदी रहे हैं, जो उनके निबंधों में भी झलकता है। अव्यवस्था, आंडबर एवं कुरीतियों पर ऐसा कटाक्ष पूर्ण व्यंग्य शुक्ल जी करते हैं कि पाठक वर्ग सोचने को विवश हो जाता है जैसे – ''एक लड़का सड़क पर पेशाब कर रहा था, दूसरे ने देख लिया तो चिल्लाया – क्या कर रहा है रे? चल तेरे बाप को बताता हूं'। उसका भाई देहरी पर बैठकर पेशाब कर रहा था, तब उस आदमी ने कहा – 'चल तेरे बाप को बताता हूं।' उसका बाप तो छत के ऊपर खड़े होकर पेशाब कर रहा था। अभिप्राय यह है कि जब आदमी खुद तो बिगड़ा हुआ है, तो दूसरा क्या समझाएगा? पर्यावरण की शिक्षा देने वाले धुआँधार सिगरेट फूंकेंगे और ऊपर से प्रदूषण का रोना रोएँगे तो यह कहॉ तक उचित है ?'' [10]

आज की शिक्षा पद्धति पर पं. शुक्ल ने ऐसे व्यंग्य किया है – '' आज ही की शिक्षा और जीवन के बीच हनुमान–कूद की स्थिति हो गई है। जब विद्यार्थी पढ़ता है तब तक जीवन से उसका कोई संबंध नहीं रहता और जब जीवन में उतरता है तो शिक्षा से कोई संबंध नहीं रहता। ऐसी है हमारी शिक्षा नीति।'' [11]

8) भावात्मक शैली :– पं. शुक्ल जी विवेचन और वर्णन ही नहीं करते, व्याख्या और संभाषण ही नहीं करते, व्यंग्य एवं कटाक्ष ही नहीं करते, वे व भावों की धारा में बेसुध सा आकन्ठ डूबे बहते ही जाते हैं, जिसका पता हमें उनके निबंधों के भावात्मक शैली की अभिव्यक्ति में चलता है। ग्राम्य कृषक जीवन की कठिनाइयों और तकलीफों से रू–ब–रू. हो चुके पं. शुक्ल जी ग्रामीण कृषक जीवन का चित्रण भाव विह्वल होकर कुछ इस तरह करते है – ''गाँव की झोपड़ियों में बैठा हुआ एक छोटा–सा किसान, जिनके गाँव में आज के जमाने की कोई सुविधाएँ नहीं पहुँची हैं, दिन भर पत्थर फोड़ता है, मिट्टी खोदता है, लंगोटी लगाया हुआ और जब शाम को वापस आता है झोपड़ी में तो चिमनी की ढिबरी के नीचे बैठकर मस्ती में तन्मय होकर रामचरितमानस की चौपाइयाँ गाता है। उससे जो सुख प्राप्त होता है, वह सुख क्या आज कोई दे सकता है ?'' [12]

9) काव्यात्मक शैली :– पं. शुक्ल जी मूलतः कवि है लेखक बाद में, तो उसकी कवि कल्पना का विस्तार तो गद्यो में भी होना स्वाभाविक है। शुक्ल जी यत्र–तत्र अपने निबंधों में काव्यात्मक शैली में भी विवेचन करना प्रारंभ कर देते हैं, जिसमें काव्यों सी कल्पना, अलंकारिकता एवं कोमलकांत पदावली का समावेश दिखाई पड़ता है। शायद उनका कवि हृदय गद्य में भी काव्य–भूमि की तलाश करता फिरता है। उदाहरणार्थ – ''मनुष्य अपनी मनः स्थिति के आधार पर वनस्पति जगत का दर्शन करता है। सुख के क्षणों में वनस्पितियों में भी हर्षोल्लास दिखाई पड़ता है। चंद ज्योत्सना में नहाई हुई निशा, प्रातः काल की अरूणियों में नहाई हुई वसुधा, कोयल की कूजन, फूलों की महक, सुरभित मलय समीर, नाना प्रकार के फूलों से लदे हुए वृक्ष, विविध फूलों से लदी डालियाँ, नव कुसुमित व नव पल्लवित शीतल मंद सुगंध समीर के हिलकोरे से मृदु मंद–मंद हिलती–डुलती वल्लरियाँ मादक अनुराग में अभिवृद्धि कर देती है।'' [13]

10) संस्मरणात्मक या आत्मकथात्मक शैली :– इस शैली में लेखक अपने यात्रा वृत्रान्त या जीवन के कुछ रोचक प्रसंगों का वर्णन कथात्मक या संस्मरणात्मक रूप से करता है। पं. शुक्ल ने अपने निबंधों में भी कई स्थलों पर इस शैली का प्रयोग किया है। बानगी प्रस्तुत है –''एक बार मैं केरल गया तो मेरे लिए जो जाइजनिंग ऑफीसर नियुक्त किया गया था, वह एम.ए. पास अच्छा अधिकारी था। वह कोई फर्राटेदार अंग्रेजी नहीं बोलता था। एक पंक्ति अंग्रेजी का बोलता था तो दूसरी पंक्ति में मलयालम पर जाता था। जब मैंने कहा – ''आप अंग्रेजी में बेहतर समझेंगे या मैं हिन्दी में बोलूँ? तो उसने कहा – ''आप तो हिंदी में ही बोलें मैं समझ लूँगा।'' यह पर्याप्त प्रमाण है कि वहाँ भी अंग्रेजी में सक्षम लोग नहीं है .....।'' [14]

निष्कर्ष :– उक्त विवेचनों से स्पष्ट है कि पं. राजेन्द्र प्रसाद शुक्ल जी के निबंधों में निबंध की साहित्य स्वीकृत लगभग सभी शैलियों का प्रयोग हुआ है। उक्त वर्णित शैलियों के अतिरिक्त यत्र–तत्र, ओजस्वी शैली, अभिव्यंजना शैली, प्रतीक शैली, उदाहरण शैली, कथात्मक शैली एवं समास आदि शैली का प्रयोग मिलता है। उनकी शैली आयंत संयत, शालीन और सुष्ठु रूप से सुसज्जित होकर प्रस्तुत हुई है। विचारों का सुगुंफन और कसाव उनका वैशिष्ट्य है। पाठकों के मन को प्रभावित करने, अभिभूत करने और कथ्य को उन तक संप्रेषित करने में शुक्ल की शैली (शैलियाँ) सर्वत्र समर्थ है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. द प्राबलम आफ स्टाइल –जे.एम.मरे–पृ. 17 (1922)
2. सिद्धांत और अध्यपन – बाबू गुलाब राय, पृ. 190, आत्माराम संस दिल्ली, 1967
3. संस्कृति का प्रवाह – पृ. 17, विद्याबिहार नई दिल्ली, 2002
4. संस्कृति का प्रवाह – पृ. 108, विद्याबिहार नई दिल्ली, 2002
5. मेरी विचार यात्रा – पृ. 114, रामप्रसाद एण्ड संस, आगरा, 1988
6. मेरी विचार यात्रा – पृ. 89, रामप्रसाद एण्ड संस, आगरा, 1988
7. संस्कृति का प्रवाह – पृ. 41, विद्याबिहार नई दिल्ली, 2002
8. धरती की बात – पृ. 71, शांति प्रकाशन, इलाहाबाद, 1989
9. धरती की बात – पृ. 84, शांति प्रकाशन, इलाहाबाद, 1989
10. संस्कृति का प्रवाह – पृ. 216, विद्याबिहार नई दिल्ली, 2002
11. संस्कृति का प्रवाह – पृ. 135, विद्याबिहार नई दिल्ली, 2002